International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

राजा दशरथ के राजमन्त्रियों के गुण और नीति का वर्णन

डॉ0 सीमा
अंशकालिक संस्कृत प्राध्यापिका
गौड़ कॉलेज, रोहतक

भूमिका

वेद जिस परमतत्व का वर्णन करते हैं, वहीं श्रीमन्नारायण तत्व श्रीमद् रामायण में श्रीराम से निरूपित है। वेद वेद्य परम–पुरूषोत्तम के दशरथ नन्दन के श्रीराम के रूप में अवतीर्ण होने पर साक्षात् वेद ही श्रीवाल्मीकि के मुख से श्री रामायण के रूप में प्रकट हुए, ऐसी आस्तिकों की चिरकाल से मान्यता है। इसलिए श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण की वेद तुल्य प्रतिष्ठा है।

यों भी महर्षि वाल्मीकि आदिकवि है अंतः विश्व के समस्त कवियों की गुरु हैं। उनका आदिकाव्य श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण भूतल का प्रथम काव्य है। वह सभी के लिए पूज्य वस्तु है। भारत के लिए यह परम गौरव की वस्तु है और देश की सच्ची बहुमूल्य राष्ट्रीय निधि है।

रामायण में राजनीति एवं शासन व्यवस्था

वाल्मीकि की राजनीति बहुत उच्च कोटि की है। उसके सामने सभी विचार तुच्छ प्रतीत होते हैं। हनुमान जी तो नीति की मूर्ति प्रतीत होते है। रामायण में राजा दशरथ की

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

शासन व्यवस्था का बड़ा ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इनके शासन काल में ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के लोग देवता और अतिथियों के पूजक, कतृज्ञ, उदार शूरवीर और पराक्रमी थे।

वर्णेष्वग्र्यचतुर्थेषु देवातिथिपूजकाः।

कृतज्ञाश्च वदान्याश्च शूरा विक्रमसंयुता।।बा. काण्ड/6/17

उनके शासन काल में वर्ण व्यवस्था विद्यमान थी। सभी वर्ग के लोग एक दूसरे का बहुत अच्छे से ख्याल रखते हैं जैसा कि इस श्लोक में बताया गया है –

क्षत्रं ब्रह्ममुखं चासीद् वैश्याः क्षत्रमनुव्रताः

शूद्राः स्वकर्मनिरतास्तीन् वर्णानुपचारिणः।। बालकाण्ड/6/19

अर्थात् क्षत्रिय ब्राह्मणों का मुँह जोहते थे, वैश्य क्षत्रियों की आज्ञा का पालन करते थे और शूद्र अपने कर्तव्य का पालन करते हुए उपर्युक्त तीनों वर्णों की सेवा में संलग्न रहते थे।

राजा दशरथ के मन्त्रिमण्डल की स्थिति

इक्ष्वाकुवंशी वीर महामना राजा दशरथ के मन्त्रिगण सर्वगुण सम्पन्न थे। वे मनुष्य की बाहरी स्थिति देखकर ही उनके हाव भाव को समझ लेते थे और दिन–रात प्रजा की भलाई में लगे रहते थे। ये मन्त्री स्वामिभक्त थे और राजा की आज्ञा की पालन करते थे। महाराजा दशरथ के मन्त्रिमण्डल में आठ मन्त्री थे जो कि जनोचित गुणों से सम्पन्न थे। वे सभी शुद्ध आचार–विचार से युक्त थे और राजकीय कार्यों में संलग्न रहते थे।

इन आठों मन्त्रियों के नाम इस प्रकार हैं – धृष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रवर्धन, अकोप, धर्मपाल और आठवें सुमन्त्र जोकि अर्थ शास्त्र के ज्ञाता थे।

धृष्टिजर्यन्तो विजयः सुराष्ट्रो राष्ट्रवर्धनः।

अकोपो धर्मपालश्च समुन्त्रश्चाष्टमोऽर्थवित्।। बालकाण्ड/7/3

इनके मन्त्री बहुत ही विश्वसनीय थे। अपने या शत्रुपक्ष के राजाओं की कोई भी बात इनसे छिपी नहीं रहती थी। कहाँ क्या हो रहा है, दूसरा राजा क्या कर रहा है, क्या करना

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

चाहता है और क्या कर चुका है ये सभी बातें ये मन्त्री अपने गुप्तचरों द्वारा पता करवा लेते थे।

तेषामविदितं किंचित् स्वेषु नास्ति परेषु वा

क्रियमाणं कृतं वापि चारेणापि चिकीर्षितम्।। 1/7/9

ये सभी मन्त्रिगण व्यवहार कुशल थे। राजा दशरथ ने इनके सौहार्द की अनेक बार परीक्षा ली थी। ये लोग इतने विश्वसनीय थे कि मौका पड़ने पर अपने ही पुत्र को उचित दण्ड देने में भी नहीं हिचकते थे।

कुशला व्यवहारेषु सौहृदेषु परीक्षिताः।

प्राप्तकालं यथा दण्डं धारयेयुः सुतेष्वपि।।1/7/10

इन सभी मन्त्रियों में सदा बल और उत्साह भरा रहता था। ये राजनीति के अनुसार कार्य करते थे और राज्य व राज्य के लोगों की रक्षा में सदा तत्पर रहते थे।

वीराश्च नियतोत्साहा राजशास्त्र मनुष्ठिताः

शुचीनां रक्षितारश्च नित्यं विषयवासिनाम्।।1/7/12

ये मन्त्री लोक कोई भी अनैतिक कार्य नहीं करते थे और ईमानदारी से व न्यायोचित ढंग से राजा के खजाने में धन की वृद्धि करते थे। वे अपराधी पुरुष के बल और अबल (क्षीणता) देखकर उसके प्रति तीक्ष्ण तथा मृदु दण्ड का प्रयोग करते थे। ये हमेशा दीन मनुष्य की सहायता में तत्पर रहते थे।

ब्रह्मक्षत्रमहिंसन्तस्ते कोशं संपूरयन्।

सुतीक्षणदण्डाः सम्प्रेक्ष्य पुरुषस्य बलाबलम्।।1/7/13

ये सभी मन्त्री शुद्ध विचारों से युक्त थे। उनके अनुसार अयोध्या या कोशल देश में एक भी मनुष्य ऐसा नहीं था जो मिथ्या बोलने वाला, दुष्ट स्वभाव वाला और परस्त्री लम्पट हो। सारे राष्ट्र और नगर में पूर्णतः शान्ति छायी रहती थी।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

उन मन्त्रियों के वस्त्र सदा स्वच्छ तथा वेष सुन्दर होते थे। ये उत्तमव्रतों का पालन करने वाला तथा राजा दशरथ के हितैषी थे। वे अपने नीति रूपी नेत्रों से देखते हुए सदा सजग रहते थे।

सुवाससः सुवेषाश्च ते च सर्वे शुचिव्रताः
हितार्थश्च नरेन्द्रस्य जाग्रतोनयनचक्षुषा।।1/7/16

अपने गुणों के कारण ये मन्त्री राजा दशरथ से गुरुतुल्य समादर पाते थे ये राजा के अनुग्रह के पात्र थे। देश–विदेशों में सर्वत्र इनकी ख्याति थी और हर जगह ये गुणवान ही सिद्ध होते थे। इन्हें सन्धि और विग्रह के उपयोग और अवसर का बहुत अच्छे से ज्ञान था।

इन मन्त्रियो में राजकीय, मन्त्रणा को गुप्त रखने की शक्ति थी एवं सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय का विचार करने में कुशल थे। नीति शास्त्र की इन्हें बहुत अधिक जानकारी थी। ये अपने–2 गुप्तचरों द्वारा शत्रु–राज्य के वृतान्तों पर दृष्टि रखते थे। उनकी प्रतिष्ठा सब ओर फैली हुई थी।

ऋषियों में श्रेष्ठतम वसिष्ठ एवं वामदेव थे – ये दो महर्षि राजा के माननीय ऋत्विज थे। इनके सिवा सुयज्ञ, जाबलि, काश्यप, गौतम, दीर्घायु मार्कडेय और विप्रवर कात्यायन भी महाराज के मन्त्री थे।

ऋत्विजौ द्वावभिमतौ तस्यास्तामृषि सन्तमौ।
वसिष्ठो वामदेवश्च मन्त्रिणश्च तथा परे।।1/7/4
सुयज्ञोऽप्यथ जाबालिः काश्यपोऽथ गौतमः
मार्कण्डेयस्तु दीर्घायुस्तथा काव्यायनो द्विजः।।1/7/5

इन ब्रह्मषियों के साथ राजा के पूर्व परम्परागत ऋत्विज भी सदा मन्त्री का कार्य करते थे। सब विद्वान् होने के साथ–2 विनयशील, सलज्ज, कार्य कुशल, जितेन्द्रिय, श्रीसम्पन्न, महात्मा, शस्त्रविद्या के ज्ञाता, सुदृढ़, पराक्रमी, यशस्वी, समस्त राजकार्यों में सावधान, राजा की आज्ञा के अनुसार कार्य करने वाले, तेजस्वी, क्षमाशील, कीर्तिमान तथा मुस्कुराकर बात करने वाले थे।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

ऐसे गुणवान मन्त्रियों के साथ रहकर निष्पाप राजा दशरथ उस भूमण्डल का शासन करते थे। उनकी तीनों लोकों में प्रसिद्धि थी। वे उदार तथा सत्य प्रतिज्ञ थे। पुरुष सिंह राजा दशरथ अयोध्या में रहकर ही इस पृथ्वी का शासन करते थे।

निष्कर्ष :

राजा दशरथ के मन्त्री विश्वसनीय थे। वे मन्त्रणा को गुप्त रखने वाले तथा राज्य के हित में संलग्न रहते थे। वे राजा के प्रति अनुरक्त तथा कार्यकुशल एवं शक्तिशाली थे। जैसे सूर्य अपनी तेजोमयी किरणों के साथ उदित होकर प्रकाशित होते हैं वैसे ही राजा दशरथ उन तेजस्वी मन्त्रियों से घिरे रहकर शोभा पाते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकि रामायण, 1/6/7
2. वही, 1/6/19
3. वही, 1/7/13
4. वही, 1/7/9
5. वही, 1/7/10
6. वही, 1/7/12
7. वही, 1/7/13
8. वही, 1/7/16
9. वही, 1/7/4
10. वही, 1/7/5